

**करवरना** अ.क्रि. (तद्.+तत्.) चहकना, चहचहाना, कलरव करना।

**करवरा** स्त्री. (देश.) मुसीबत; विपत्ति, आफत, संकट उदा. आनंद बधावनो मुदित गोप-गोपी-गन, आजु परी कुसल कठिन करवर तै - गीतावली।

**करवा** पुं. (तद्.-करक) मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा उदा. पातक, पीन, कुदारिदा दीन, मलीन धरे कबरी करवा है (कवितावली) 2. काला, काले रंग का, श्याम जैसे- "करवा से प्रीति कहाँ"।

**करवा चौथ** स्त्री. (तद्.) करवाचतुर्थी (करका चतुर्थी), कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, उक्त तिथि में पति परायणा सुहागिन महिलाओं द्वारा निराहार व्रत रखा जाता है जो चंद्रदर्शन के उपरांत पूर्ण होता है।

**करवान (कृपाण)** स्त्री. (तद्.) तलवार, कृपाण उदा. कीनौ कतलान करवान गहि कर में।

**करवानक (कलविङ्क)** पुं. (तद्.) चटक पक्षी, गौरैया, चिड़ा उदा. सारस से सूवा-करवानक से साहजादे। भूषण ग्रंथ। (529)।

**करवाना** स.क्रि. (तद्.) 1. दूसरे को काम करने में लगाना या प्रवृत्त 'करना' का प्रेरणार्थक रूप, जैसे- मुझे बच्चों से आज घर का काम करवाना है, करवाया, कराया- (स.क्रि.) उदा. "मारि निसाचर निकर जग्य करवायउ (तुलसी-जानकी. 38)।

**करवार** स्त्री. (तद्.) तलवार, कृपाण।

**करवारी** स्त्री. (तद्.) तलवार, कृपाण।

**करवाल** स्त्री. (तद्.) तलवार, कृपाण।

**करवाह्यता** स्त्री. (तद्.) 1. 'करापात' 2. कर या टैक्स के भार को वास्तविक तौर पर वहन करना।

**करवी** स्त्री. (तद्.) कबरी, गुंथी हुई चोटी स्त्री. (देश.) 1. ज्वार और बाजरे के सूखे पौधे (जिन्हें गड़ासे या मशीन से कूट (कुट्टी करके) कर पशुओं को चारे के रूप में खिलाया जाता है 2. पशुओं का चारा, कड़वी।

**करवीर** पुं. (तद्.) 1. कनेर का फूल उदा. "वीर करै करवीर झरै निखिलै हरषै छबि आपनी पाइकै" 2. तलवार 3. मरघट, श्मशान।

**करवील** स्त्री. (तद्.) करील वृक्ष।

**करवैया** वि. (देश.) काम करने वाला, काम कराने वाला।

**करशीकर** स्त्री. (तद्.) हाथी के द्वारा अपनी सूंड से फेंका गया पानी।

**करष** स्त्री. (तद्.) 1. मनमुटाव, खिंचाव, तनाव, द्रोह, विरोध, बातहिं-बात करष बढि आई" (मानस) 2. जोश, ताब 3. आकर्षण 4. वैर- "कंत करष हरि सन परिहरहू" -तुलसी (मानस)।

**करषक** पुं. (तद्.) किसान, खेती करने वाला, कृषक।

**करषना/करसना** स.क्रि. (तद्.) (कर्षण) 1. खींचना, तानना, घसीटकर ले जाना 2. सोखना, सुखाना 3. आकर्षित करना 4. बुलाना, नियंत्रित करना उदा. उर वतमाल पदिक प्रति सोभित, बिप्र चरन चित कहँ करषै" 5. समेटना, बटोरना उदा. चहुँ ओरन करषतैं"- भूषण ग्रंथ (236) अ.क्रि. खिंचना, निकलना उदा. देखत विषादु- मिटै, मोदु करषतु है- तुलसी-कवितावली 6/58।

**करषा** पुं. (तद्.) 1. जोश, उमंग, उत्साह 2. क्रोध, आवेश 3. स्पर्धा उदा. 1. एकहिं एक बढ़ावहिं करषा" -मानस 2. "राति दिवस बरषत झर लाए दिन दूनी करषा सौ" -सूरसागर 10/4116)।

**करसंपुट** पुं. (तद्.) 1. दोनों हाथों की हथेलियों को जोड़कर बनाई हुई अंजलि 2. विनती के समय हाथ जोड़ने की स्थिति या मुद्रा।

**करस** पुं. (तद्.) 1. कलश 2. कंगूरा उदा. "रूप अनूप, जात रूप के करस हैं।"

**करसना** स.क्रि. (तद्.) दे. करषना।

**करसान** पुं. (तद्.) कृषाण (तद्.), खेतिहर, किसान, कृषक।